डॉ. दीपक सिंह बिष्ट

पनहरे की व्यथा

था कभी जन-वन भिगोता,
पानी की मोटी धार से।
धार दुर्बल हो चली,
गरमी की भीषण मार से।

तर गला और खेत सींचे,
दिन भी वो क्या खूब थे।
स्वयं ही अब प्यासा हुआ मैं,
वक्त की इस चोट से।

सूखते उजड़े पहाड़ों,
खाली होते गांव से।
जंगलों से गायब होती,
ठंडी शीतल छांव से।

कह रहा हूं मैं निरंतर,
मौन के इस शोर में।
छूट जाऊंगा अकेला,
दुष्कर समय के दौर में।

फिर मुझे यह याद आता
इनको न मैंने संभाला।
क्षीण हो कर स्वयं ही मैंने
जिंदगी को मार डाला।

अब न अविरल धार बाकी,
न ही वो परिवेश है।
मेरा भी अस्तित्व अब,
विलुप्त होना शेष है।

संपर्क करें:
डॉ. दीपक सिंह बिष्ट
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान
पश्चिमी हिमालय क्षेत्रीय केंद्र, जम्मू-180 003
जम्मू और कश्मीर